वेदों में भगवान श्री चित्रगुप्त

वेद में यह बात कही गयी है कि सृष्टि के पहले सब जगह, सभी लोकों में एक परमा त्मा के सिवा सत्–असत् कुछ भी नहीं था। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में ऋषि का मंत्र दर्शन है –

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत्।
किमावरीवः कुहकस्य शर्मन्नम्भः किमासीद् गहनं गभीरम् । 1।
न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत् प्रकेत : ।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्नपरः किं चनास । ।।

(ऋग्वेद 10।129।1,2)

भावार्थ – न सत् था, न असत् था । प्रलय के समय न तो भूमि थी, न पाताल और व्योम था, अन्तरिक्ष और स्वर्ग भी नहीं थें, आवरण भी नहीं था, चारों ओर जल–ही–जल दिख पड़ता था । न मृत्यु थी, न अमरता थी, रात और दिन का ज्ञान नहीं था; मन और प्राण के परे परमात्मा परब्रह्मा ही अपने स्वरूप में व्याप्त थे । इस नासदीय सूक्त के मन्त्रदृष्टा ऋषि को, सच्चिदानन्द परमात्मा के स्वरूप का चित्रगुप्त निराकार ब्रह्म के रूप में साक्षात्कार हो सका। परब्रह्मा परमेश्वर ही अनादि–अनन्त चित्रगुप्त हैं, वे हीं निगुण, निराकर, निरञ्जन, निर्विकार होकर भी प्रकृति से परे स्वरूप में अभिव्यक्त होकर भी सृष्टि के संयमन के लिए साकार रूप में प्रत्यक्ष हैं। चित्रगुप्त परम प्रकाश स्वरूप परब्रह्म परमेश्वर हैं। वे नित्य, सनातन, सर्व व्यापक, सच्चिदानन्द स्वरूप, अप्रमेय परमात्मा हैं। वे सत्–असत दोनों से ही परे अविनाशी नियन्ता, न्यायब्रह्म हैं। चित्रगुप्त के सनातन, नित्य, अप्रत्यक्ष, अव्यक्त रूप का वेद के अनेक मंत्रों में प्रत्यक्ष–साकार दर्शन होता है। पौराणिक कथायें और मान्यतायें उने वैदिक स्वरूप का कल्पभेद के अनुक्रम से निरूपण मात्र हैं। चित्रगुप्त समस्त प्रकाशों के परम प्रकाशक, सच्चिदानन्द घनस्वरूप परमेश्वर–स्वयं संवेद्य परमात्मा हैं।

तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतमश्रितम्।
चित्रं सन्तं गुहाहितं सु वेदं कूचदर्थिनम्।

(ऋग्वेद 4।7।6)

वेदों में भगवान श्री चित्रगुप्त भावार्थ – जिस तरह आकाश, प्रकाश, अग्नि और विद्युत सब जगह व्याप्त हैं, ठीक उसी तरह विद्वान, ऋषि महर्षि तथा संत जन महामायामयी मातृशक्ति–स्वरूपिण परम प्रभा के रूप में इस दृश्य जगत् में परिव्याप्त कान्तिमान, गरिमामय, अप्रतिम तथा अनुपम चित्र–चेतनामय सच्चिदानन्द स्वरूप, सत्स्वरूप, गुहांहित–परम गुप्त अन्तरिक्ष में सूर्य या वायु के समान गुढ़ भाव में स्थित–उत्तम रीति से भक्तों द्वारा जानने और मनन करने योग्य चित्रगुप्त परमेश्वर की उपासना में रत रहते हैं। चित्रगुप्त परम अद्भुत–अनुपम–विलक्षण परमात्मा हैं। चित्रगुप्त ही परम उपास्य, आराध्य और पूजनीय हैं।

'स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः।
त भागं चित्रमीमहे। '

(ऋग्वेद 5/82/3)

भावार्थ – परम भजनीय–उपास्य परमेश्वर समस्त सृष्टि के उत्पादक हैं, सम्पूर्ण ऐश्वर्यो के स्वामी हैं, वे रमणीय वैभव, ऐश्वर्य प्रदान करते हैं, वे परम देव्य, आराध्य, चित्र–अनुपम रूप से उपासना किये जाने के योग्य हैं, हम उनकी उपासना करते हैं तथा उनसे ऐश्वर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं।

परम प्रकाशस्वरूप चित्रगुप्त का अग्नि–तेजस्वरूप में स्तवन करते हुए वैदिक ऋषि का मंत्र–दर्शन है –

त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः।
शोचिष्केशं पुरुप्रियाग्ने हव्याय वोळ्हवे ।।

(ऋग्वेद1।45।6)

भावार्थ – हे परम पूज्य, अद्भुत ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! जिस तरह हविपदार्थ को वायु, जल आदि से संयुक्त करने के लिए अग्नि देवता तथा रथ को चलाने के लिए अश्व का आवाहन होता है, उसी तरह सुनहरी किरणों से युक्त तेजस्वी सूर्य के समान प्राणी उत्तम ज्ञान, ऐश्वर्य और प्रकाश को पाने के लिए आप का स्तवन करते हैं । परम ऐश्वर्य–निधान परमेश्वर चित्रगुप्त की महिमा अप्रमेय है।

चित्रइद्रा जा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु।
पर्जन्यइव ततनद्धिवृष्ट्या सहस्रमयुता ददत्।।

(ऋग्वेद 8।21।18)

भावार्थ – जिस तरह मेघ जल बरसाकर पृथ्वी के समस्त जड़–चेतन को सींचता और तृप्त करता है, ठीक उसी तरह सरस्वती नदी के तट देश–ब्रह्मदेश में राज्य करने वाले परमात्मा चित्र (गुप्त) अपनी छत्रछाया में सुरक्षित कर उन्हें ऐश्वर्य, प्रभुता और धन आदि से सम्पन्न कर संतुष्ट रखते हैं।

अपने ही अंश समस्त जीवमात्र की रक्षा में तत्पर रहकर सबका पालन–पोषण करते हैं। चित्रगुप्त सारी सृष्टि के पूज्य और उपास्य हैं। वैदिक काल में प्रत्येक प्रजासंघ के राष्ट्र–पुरुष द्वारा उनकी पूजा और उपासना की जाती थी।

अयनिह प्रथमोधायि धातृभिहा ता यजिष्टो अध्वरे घीड्यः
यमप्नवानो भृगवो विरूरूचुर्वनेषु चित्रं विम्बं विशेविशे।।
(यजु वेद 3/15)

भावार्थ – परमात्मा चित्रगुप्त अपने आश्रित प्रजासंघ के राष्ट्रपुरूषों के शत्रु को संतापित कर अपने शरणागत की रक्षा करते हैं। राष्ट्र–पुरूष संग्राम में शत्रु को पराजित कर चित्रदेव की स्तुति करते हैं। चित्रगुप्त एकता के सूत्र में प्रत्येक प्राणी को संगठित कर उसकी रक्षा करते हैं, जिस तरह वानप्रस्थी अपने यज्ञादि सत्कर्म से अपनी संतान का हित करते हैं।

टिप्पणी – अनेक पुराणों में चित्रगुप्त और यम (धर्मराज) के पारस्परिक सम्बन्ध पर प्रकाश डाला गया है। वेद के मंत्रों में मृत्यु–पुरूष के रूप में यम का दर्शन होता है। उन्हें कालपुरूष कहा गया है। विष्णु पुराण में विवेचन है कि देवयान और पितृयाण सूर्य के भ्रमण पथ–क्रान्तिवृत्त के अंश विशेष हैं। यम का पथ पितृयाण अथवा दक्षिण मार्ग हैं। उत्तरायण–देवयान में सूर्य के छः मास निवास की अवधि देवता की रात हैं। पितृयाण ही यमलोक है। इसमें वैतरणी नदी बहती है। इस यमलोक में दो कुत्ते रक्षक का काम करते हैं। तैत्तिरीय ब्राह्मण (1। 1।2) में दो दिव्य श्वानों का उल्लेख है और कालकंज–कालपुरूष नामक असुर का वर्णन है। पद्मपुराण में उत्तरखण्ड के श्लोक 22/5 (1–2) के अनुसार धर्मराज, यमराज और चित्रगुप्त एक ही आदि शक्ति, परमेश्वर परमपुरूष के विभिन्न नाम हैं। श्री चित्रगुप्त न्यायधीश स्वरूप हैं, दण्डकर्ता स्वरूप में यमराज हैं और पुरस्कार प्रदाता धर्मराज हैं। वैदिक वाङ्मय में यम निरूपण निम्न प्रकार है –

यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन।
इदं नाम ऋषिभ्यः पूर्व जेभ्यः पथिकृद्भयः।।
(ऋग्वेद 10।14।15)

भावार्थ – यम हमारे नियन्ता, शासक हैं, मधुर उपकरण से उनकी पूजा करनी चाहिए। हमारी यह पूजा ऋषिकल्प पितरों के प्रति श्रद्धा और आदर की प्रतीक है। यम के श्वानों के सम्बन्ध में ऋषि का मंत्रदर्शन है कि इनके द्वारा रक्षित यम–मार्ग को छोड़कर जीवात्मा को मुक्त हो जाना चाहिए। वेद में यम का स्तवन है।

यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ
चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ।
ताभ्यामेनं परि देहि राजन्त्स्वस्ति
अस्मा अनमीवश्च धेहि।।
(ऋग्वेद 10।14।11)

भावार्थ – हे नियन्ता, यम ! ये सदा चलते रहने वाले और मृत्यु से बचाने वाले तथा चारों आश्रमों में जीवन–मार्ग की रक्षा करने वाले, देह के स्वामी आत्मा को ज्ञान–दर्शन कराने वाले प्राण–अपान हैं। उनसे इस जीवात्मा को मुक्त कर उसे आरोग्य और सुख दीजिये। हे यम! आपके गृह के रक्षक तथा मनुष्य द्वारा प्रशंसनीय चार आँखवाले दोनों श्वानों से आप जीवात्मा की रक्षा कर आरोग्य प्रदान कर कल्याण के मार्ग पर ले चलिये।

वैदिक वाङ्मय में यम का देवत्व प्रतिपादित है, अतः परमात्मा चित्रगुप्त का अस्तित्व सहज सिद्ध–प्रत्यक्ष है। यमराज की गणना इन्द्र, अग्नि, निद्धति, वरूण, वायु, कुबेर, इशान के सहित आठ दिक्पालों में की गयी है। कहा जाता है कि सबसे पहले परलोकगामी यम परिगणित हैं, उन्होंने ही परलोक में जाकर वहाँ तक पहुँचने का लोगों को मार्ग बताया। यम के नियामक–रूप में हमारे पुराणों में चित्रगुप्त की प्रभुसत्ता–न्याय–शक्ति का निर्णय किया गया है। वैदिक विचारधारा में चित्रगुप्त साक्षात परमेश्वर हैं।

आश्वलायन गृह्यसूत्र में भी चित्रगुप्त जी को यमपुरूष कहा गया है। यम के साथ ही यमपुराण के रूप में उनके भी यज्ञ में आवाहन की चर्चा है।

इन्द्रायेन्द्रपुरूषेभ्यो यमाय
यमपुरूषेभ्यो वरूणाय
वरूणपुरूषेभ्यः सो माय
सोमपुरूषेभ्य इति प्रतिदिशम्।
(आश्वलायनगृहासू 1।2।5)

ऋग्वेद में यम के स्वरूप का जो चिन्तन मिलता है, उससे चित्रगुप्त जी या यम के भी देवत्व का पता चलता है। वे नियन्ता के रूप में चित्रित हैं।

यमो नो मातुं प्रथमो विवेद नै षा गव्यूतिरपमर्तवा उ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्या अनु स्वाः।।
(ऋग्वेद 10।14।2)

भावार्थ – इस वैदिक ऋचा का आशय यह है कि सबसे उत्कृष्ट पुरूष यम नियन्ता हैं। वे हमारी भूमि को प्राप्त करें, हमारी वाणी और स्तुति के पात्र हों, वे हमारी वाणी सुनें और हमारे इष्ट पदार्थ की ओर ध्यान दें, हमारा पथ–प्रदर्शन करें, जिस मार्ग से हमारे पितर–पूर्वपुरूष ने अपनी जीवनयात्रा पूरी कर परलोक प्राप्त किया उसका हमें त्याग नहीं करना चाहिए।

चित्रगुप्त और यम, दोनों के वैदक स्वरूप के चिन्तन से

CS Scanned with CamScanner

यह बात स्पष्ट हो जाती है कि चित्रगुप्त विराट् पुरूष–परमात्मा के नाम–रूप से परे अभिन्न स्वरूप हैं । विशेषता यह है कि चित्रगुप्त ही निराकार, निर्विकार, परम चिन्मय प्रकाशस्वरूप परमात्मा के रूप में ही मंत्रदृष्टा वैदिक ऋषियों द्वारा स्वीकृत और स्तुत्य हैं । वैदिक ऋषि ने चित्रगुप्त का स्तवन किया।

इन्द्रा याहिचित्रभानौ सुता इमे
त्वायवः आण्वीभिस्तनाः पूतासः।

(ऋग्वेद 1।3।4)

भावार्थ–हे ऐश्वर्यानिधान परमेश्वर ! है चित्रभानो, परमप्रकाशस्वरूप परमात्मा, आप हमें प्राप्त हों ! समस्त ऐश्वर्य और सम्पत्तियुक्तप्रकाश की किरणों से परिव्याप्त समस्त पदार्थ आपकी पूजा के उपकरण हों, सब के सब आपकी सत्ता से परम पवित्र हैं । ये सब पदार्थ सृष्टि के कण–कण आपकी महिमा के परिचायक हैं, आप सब में विद्यमान हैं ।

"भूमिश्विद् द्यासि तूतु जुजिराचित्र
चित्रिणीष्वा! चित्रं कणोष्यूतये ।"

(ऋग्वेद 4।32।2)

भावार्थ – इस मंत्र का भाष्य प्रस्तुत करते हुए आचार्य सायण ने चित्र शब्द का पूजनीय, चायनीय अर्थ स्वीकार किया है, इन्द्र परमात्मा की वैदिक ऋषि ने चित्र पूजनीय सम्बोधन से स्तुति की है । सायणकृत उपर्युक्त मंत्र का भाष्य है –

हे चित्र चायनीय पूजनीयेन्द्र त्वं भूमिश्चित् भ्रमणशीलोऽपि तूतुजिः द्यासि अस्मदभीष्टप्रदाताच भवसि आ कारश्चार्थे चित्रिणीषु चित्रकर्मयुक्तासु अस्मदुपासु प्रजासु चित्रं चायनीयं धनं ऊतये रक्षणाय आकृणोसि आसमन्तात् करोषि।

हे पूजनीय परमेश्वर! आप समस्त जगत् में सब जगह विचरण करते रहते हैं, भ्रमणशील हैं । आप अपनी प्रजा की रक्षा के लिए धन–ज्ञान और शक्ति प्रदान करते रहें । वैदिक ऋषि ने भगवान् चित्रगुप्त से, जो सर्वथा दर्शनीय अथवा परम ध्येय हैं, प्रार्थना की है कि आप हमें धन, ऐश्वर्य बल प्रदान कर हमारी रक्षा करें । हमारी सन्तान को ऐश्वर्य और प्रतिष्ठा से सम्पन्न करें।

त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय।
अस्य रायस्त्वमग्नेरथीरसि विदा गाधं तु चे तु नः।

(सामवेद 1।4।7)

इस मंत्र में भी भाष्यकार सायण ने चित्र का अर्थ दर्शनीय किया है । सायण का भाष्य है –

"हे वसो वासक अग्ने चित्रः दर्शनीयस्त्वम्।"

वेदों में भगवान् चित्रगुप्त की अनेक प्रकार से स्तुति की गयी है। उनकी परम ऐश्वर्यमयी सत्ता, अजेयता, सर्वश्रेष्ठता, पालनशक्ति आदि का वैदिक स्तुतियों में विवरण उपलब्ध होता है।

"सनितः सुसनितरूग्र चित्र चेतिष्ठ सनृत।
प्रासहा सम्राट सहुरिं सहंतं भूज्युं वाजेषु पूर्व्यम्।

(ऋग्वेद 8।46।20)

भावार्थ – वैदिक ऋषि का मंत्र दर्शन है कि हे दाता! हे उत्तम दानी, बलवान, पूजनीय, सर्वश्रेष्ठ, ज्ञानी, परमेश्वर, अजेय, अद्वितीय, पालक परमात्मा! हम आपके शरणागत हैं।

परमात्मा चित्रगुप्त ज्ञानखड्गयुक्त निरूपित किये गये हैं । वे ज्ञान रूपीखड्ग से अन्धकार रूपी शत्रु का नाश कर समस्त जगत् को अभय दान देते हैं । वे अभेद्य हैं, अखण्ड ज्योति से सम्पन्न परमेश्वर हैं। वेद में उनकी प्रार्थना की गयी है कि लोगों को सद्बुद्धि प्रदान करें तथा सत्कर्म करने की शक्ति दें।

"स त्वं नश्चित्र वज्रहस्तधृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः।
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सकिर सत्रा वाजं न जिग्युषु।

(ऋग्वेद 6।46।2)

भावार्थ – हे चित्र पूजनीय परमेश्वर! जिस तरह आप रण में विजयी पुरूष को अन्न, अश्व, रथ आदि धन बल देते हैं, उसी प्रकार कर्मक्षेत्र में प्रवृत्त हमें आप यथेष्ट बल प्रदान करें, आप हमारे शत्रु का नाश करें, आप परम ऐश्वर्य और प्रताप से सर्वथा युक्त हैं।

परमेश्वर चित्रगुप्त के प्रति वैदिक ऋचाओं में अमित श्रद्धा और भक्ति का दर्शन होता है। वे ही उपासकों और भक्तों को सब कुछ देने में परम स्वतंत्र और सर्वसमर्थ हैं । ऋग्वेद का मंत्र उनकी भगवत्ता का निरूपण करता है।

"यदिन्द्र चित्र मेहनास्ति त्वादातमद्रिवः।
राधस्तन्नो विद्वरस उभयाहस्त्या भर ।।"

(ऋग्वेद 5।39।1)

भावार्थ – हे सूर्य के समान अभेद्य और मेघ के समान उदार चित्र पूजनीय अथवा चायनीय परमेश्वर, हे ज्ञानियों को श्रद्धा और उपासकों की भक्ति के एकमात्र केन्द्र तथा धन और प्राण के स्वामी! जिस तरह सूर्य प्रकाश प्रदान करते हैं तथा उनकी कृपा से जलवृष्टि होती है, उसी तरह आपकी सत्ता और मेघ की सी उदारता से हमें ज्ञान और धन की प्राप्ति हो, आप हमें मुक्त हस्त से इनका दान करें और हम दोनों हाथों से उनको प्राप्तकर आपकी कृपा और उपासना से अपना जीवन सफल करें।

इन्धानास्त्वा शतं हिमा द्युमन्तं समिधीमहि
वयस्वन्तो वयस्कृतं सहस्वन्तः सहस्कृतम्।

CS Scanned with CamScanner

अग्ने सपल्दम्भनमदद्यो सोऽअदाभ्यम्।
चित्रावसो स्वास्ति ते पारमशीय ।।

यजु वेंद के इसी (3।18) मंत्र को वासिष्ठ हवनपद्धति में भगवान चित्रगुप्त के लिए आहुतिरूप में निरूपित किया गया है। उसमें वर्णन है –

'अत्रान्युदकस्पर्शः ऊँ इन्धाना त्वाशतँ हिमाद्युमन्तँ समिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृतँ सहस्वन्तः सहस्कृतम् । अग्ने सपत्नदं भवनमदद्यासोऽअदाभ्यम् । चित्राबसो स्वस्ति ते पारमशीय । स्वाहा । इदं चित्रगुप्ताय ।'

वासिष्ठहवन पद्धति के रचयिता ने इस तरह वेदमंत्र द्वारा 'इदं' चित्रगुप्ताय कहकर उन्हें वेदप्रतिपादित परब्रह्म परमेश्वर स्वीकार किया है। यह पुस्तक वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित है । कर्मकाण्डपरक पूजा पद्धति में उनकी स्थापना के लिए तथा आवाहन के लिए कहा गया है कि (यजु वेंद 3।18 के मंत्र के अन्तिम अंश) 'ऊँ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय' मंत्र का उच्चारण कर अधिदेवता चित्रगुप्त की स्थापना करनी चाहिए । स्थापना आवाहन का मंत्र है –

ऊँ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय।

इस मंत्र का उच्चारण कर कहना चाहिए कि मैं चित्रगुप्त का आवाहन और स्थापना करता हूँ ।

चित्रगुप्तमावाहयामि स्थपयामि।

शिव, उमा, स्कन्द, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, यम और चित्रगुप्त अधिदेवता के रूप में पूज्य और उपास्य हैं ।

'ऊँ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।'

(यजु वेंद 3।18) मंत्र का उच्चारण जब चिन्तन, ध्यान करने से चित्रगुप्त प्रसन्न होते हैं।

" Stand up, be bold, be strong. Take the whole responsibility on your own shoulders and that you are the creater of your own destiny.

All the strength and successes you want are within yourselves."

- Swami Vivekannand